(b) Utilisation of spindles and looms for private, public and co-operative sector mills separately is available for the latest year i.e. 1991-92 only while for 1989-90 and 1990-91 over-all utilisation of spindles and looms for all the sectors put together is only available. These are indicated below:

*1991-92*

| | Public | Co-op. | Private | Sectors |
|---|---|---|---|---|
| Utilisation of Spindles/Rotors (%) . | 61.30 | 81.53 | 79.67 | 75.93 |
| Uilisat on of Lcoms (%) | 53 83 | | 65.59 | 55.43 |

*Capacity Utilisations (%)*

| Year | Spindles/ Rotors | Looms |
|---|---|---|
| 1989-90 | 73 | 63 |
| 1990-91 | 78 | 61 |
| 1991-92 | 76 | 55 |

(c) The criteria for determining efficiency of spindles and looms utilisation is actual production achieved over the expected production and the same expressed in percentage.

**सूत की मांग**

**1860. श्री गोपालसिंह जी० सोलंकी :**
**श्री राजूभाई ए० परमार :**

क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) विगत दो वर्षों के दौरान हाथ-करघा और बिजली-चालित करघों के लिए सूत की मांग कितनी रही है ; और

(ख) सूत की पूर्ति कहां से की गई और इस क्षेत्र के लिए सूत की पूर्ति में वृद्धि करने के लिए सरकार ने क्या कदम उठाये हैं ?

**वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री अशोक गहलोत)**: (क) हथकरघा व पावरलूम में विकेन्द्रीकृत प्रकार का उत्पादन और देश में बुनाई क्षमता अधिक होने के कारण इस क्षेत्र में बुनाई कार्यकलापों का स्तर समय-समय पर बदलता रहता है जो सूत के मूल्यों, कपड़े के निकासी और राज्यों की भिन्न-भिन्न प्रकार की आर्थिक और अन्य स्थितियों पर निर्भर करता है । सूत की मांग भी इस लिए भिन्न-भिन्न होती है । वर्ष 1990–91 और 1991–92 के दौरान विकेन्द्रीकृत पावरलूम और हथकरघा क्षेत्रों में उपभोग के लिए देश की कताई मिलों द्वारा स्पन यार्न की डिलीवरी क्रमश: 1159 मिलियन किलोग्राम और 1150 मिलियन किलोग्राम थी जिसे सूत की मांग माना जा सकता है क्योंकि सूत की कमी की कोई शिकायत नहीं मिली है ।

(ख) 31 दिसम्बर 1991 की स्थिति के अनुसार देश के विभिन्न भागों में 1062 मिल स्थित हैं जिनमें 777 कताई और 285 कम्पोजिट मिल हैं जिनमें 26.53 मिलियन "स्पिन्डल" क्षमता है जो मिल क्षेत्र के अतिरिक्त हथकरघा व पावरलूम क्षेत्रों की स्पन यार्न की आवश्यकता की पूर्ति करते हैं । सूत की उपलब्धता बढ़ाने के उद्देश्य से सरकार ऋण सहायता योजना के अन्तर्गत सहकारी क्षेत्र में वर्तमान कताई मिलों के विस्तार और आधुनिकीकरण तथा अन्य कताई मिलों की स्थापना को बढ़ावा दे रही है । राष्ट्रीय वस्त्र निगम की मिलों को निदेश दिये गये हैं कि 40 और उससे कम काउंट के धागे के उत्पादन में वृद्धि करें और बुनकर बाहुल्य क्षेत्रों में "एक्स मिल" दर पर सूत की आपूर्ति के लिए सूत डिपो खोलें ।